64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയതി ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★

विषय : मिट्टी की पुकार

आवाज़ें

कभी कभी एक आवाज़ सुनाई देती है,
न जाने कहाँ से आती है और किसको ढूँढती है?
शायद मंज़िलें खोकर अब,
खुद को खोज रहा है ....।

कभी तो बहना भूली नदियों से आता है
तो कभी हरियाली तलाशती टहनियों से।
या शायद रंगों को खोए इंद्रधनुष की
कड़वी मुस्कानों से बहता है ...।

कभी तो खिलना भूले फूलों की
महक से आता है तो कभी,
रास्ता भटके तारों की चमक से।
य तो पंखे खोजती तितलियों के दर्द से।

कभी तो इंसान की हँसियों में छिपता है
तो कभी उनके खिलाफ लहरों में तैरता है।
या कभी आँसुओं से बरसता है।

कभी तो जवाब खोए सवाल लगती है
तो कभी धड़कने की कोशिश में लगी
एक बेबस दिल की तरह लगता है।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി തിയ്യതി.....

कभी तो कुचले सपनों के एक ढ़ेर में फंसे
अनमोल यादों की तरह लगता है
तो कभी गाना छोड़ दिए चिड़ियों की
आखरी सासों की तरह...।
कभी तो ज़िंदा दफनाए शांती की तरह है
तो कभी दर्द से हाथ मिलाए
खामोशी जैसा छुप होता है...।
पर कभी हाथ जोड़कर भीख भी
माँगता है,
छीने मुस्कानों को वापिस देने की,
जमे फूलों से बर्फ पिघलाने की,
आसमान को सजाए अंधकार मिटाने की।
न जाने कहाँ से आती है...?
क्यों तबाही की राजाओं पर चिल्लाता है?
क्यों इन शिकारियों को जगाता है?
क्यों इन भेड़ियों का शिकार बनता है?
पर एक बात पर मुझे भरोसा है
जब सूरज की पहली किरणों
धरती को गले लगाने से
फिरसे इनकार करेगी...,

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശ്ശൂർ
ശരിപ്പകർപ്പ്? ....
പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

खून की बूँदों से हरियाली फिर छिपेगी,
काले और सफेद रंगों से थक जाऊँगे...
तो मिट्टी ~~थ~~ की ये पुकारें बंद हो जाएगी
तब शायद मैं फिरसे बंदूकें उठाऊँगा...
इन आँसुवों से अपने मन को भरूँगा।

क्योंकि हमारी आँखों में अंधेरे ने
जाले जो बुनी है
और कानों को दर्द से जो सहलाया है...।